बरकत और रहमत की मुबारक रात

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची पाकिस्तान

"बेशक हम ने इस कुरआन को शबे क़द्र में नाज़िल किया है और ऐ सुनने वालो तुम्हें क्या मालूम कि शबे क़द्र क्या है। शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है।"
(सूर-ए-क़द्र)

रमज़ान के इस अज़ीम और बाबरकत महीने की बहुत सी खुसूसियतों में से दो ऐसी बुनियादी खुसूसियतें हैं जो लैलो नहार की गर्दिश के किसी हिस्से को हासिल नहीं। एक ये कि रोज़ों के ज़रिये से इस माहे मुबारक में तज़किय-ए-नफ़्स और ततहीरे रूह का वह निज़ाम मुक़र्रर किया गया है जो ईमान और ताअते खुदावन्दी की सबसे बड़ी बुनियाद है और इस माह के शबो रोज़ इख़्लास व अबदियत का वह तसव्वुर पेश करते हैं जो किसी और महीने में मुमकिन नहीं। दूसरी बुनियादी और अहम तरीन खुसूसियत ये है कि इसमें कुरआने हकीम का नुजूल हुआ और ये नुजूल इस मुबारक शब में हुआ जिसे "लैइलतुल क़द्र" के मुक़द्दस नाम से पुकारा जाता है। शबे क़द्र के तअय्युन में मुफ़स्सिरीन के दरमियान इख़्तेलाफ़ पाया जाता है। मगर इतनी बात ज़रूर तैशुदा मालूम होती है कि ये बाबरकत शब रमज़ान ही के महीने में है। क्योंकि सूरए बक़रा आयत-185 में अल्लाह ने उसे साफ़ तौर पर बता दिया है कि नुज़ूले कुरआन माहे रमज़ान ही में हुआ था। इन लफ़्ज़ों के साथ "रमज़ान ही वह महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया"। इसका साफ़ मतलब यही है कि शबे क़द्र इसी माहे मुबारक में है। अब इसके बाद ज़्यादातर रिवायात से यही बात मालूम होती है कि ये मुबारक शब रमज़ान के आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में से कोई एक रात है। मगर अक्सर रिवायात में तेईसवीं और सत्ताईसवीं शब के मुताल्लिक़ खुसूसियत के साथ ज़्यादा ताकीद फ़रमाई गई है। इस अद्मे इज़हार और इस इख़्फ़ा की एक वजह ये भी मालूम होती है कि अहले ईमान इस शब की तलाश में कई रातों में इबादत करें और उन्हें इस तरह बहुत सवाब हासिल हो। ग़रज़ सत्ताईसवीं रमज़ान के मुताल्लिक़ सब का ज़्यादा रुजहान है कि यही शबे क़द्र है। शबे क़द्र की फ़ज़ीलत के लिए अल्लाह का ये एलान काफ़ी है कि वह एक हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है (जिनमें कोई शबे क़द्र न हो) ये मुबारक रात क़यामत तक हर साल आती रहेगी। यही वह शब है जिसकी तारीकी के पर्दे में इलाही नूर की वह रौशनी हमें मिल गई जिसने हमें एक ऐसे निज़ामे ज़िन्दगी से पहचनवाया जो इन्सानियत की कामयाबी के लिए अब आख़िरी और हमेशा की ज़मानत है यानी "कुरआने हकीम" नुजूले कुरआन इसी शब में (हज़रत इब्ने अब्बास[रज़ि०] की हदीस के मुताबिक़) लौहे महफ़ूज़ से आसमाने अव्वल की तरफ़ नाज़िल हुआ था और फिर धीरे-धीरे तक़रीबन बाईस साल में तंजील लफ़्ज़ी की सूरत में हज़रत रूहुल अमीन के तवस्सुत से हुज़ूर अनवर सल-लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम पर उतरता रहा। हमें चाहिए कि जिस क़दर भी मुमकिन हो हम शबे क़द्र में इबादत करने की सई व कोशिश करें और इस कोशिश से भी बहुत ज़्यादा खुद कुरआने करीम को पढ़ने और समझने और उसकी हिदायतों पर अमल करने की कोशिश करें जिसके नुजूल की वजह से शबे क़द्र शबे क़द्र बन गई। यक़ीनन ये बात कितनी अफ़सोसनाक होगी! अगर हम इस शब की तो बेहद इज़्ज़त करें मगर कुरआनी हिदायात पर अमल करने में कोताही से काम लें।